Dr Vijay Pratap Singh **06-11-2020**
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D (I)H Paper I-Basic Psychological Processes

Topic: व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की परिभाषा

ऑलपोर्ट (1937) के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तन्त्रो का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते है।" ऑलपोर्ट की इस परिभाषा मे व्यक्तित्व के भीतरी गुणों तथा बाहरी गुणो को यानी व्यवहार को सम्मिलित किया गया है। परन्तु ऑलपोर्ट ने भीतरी गुणों पर अधिक बल दिया है।
अर्थात् यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व होता है।

व्यक्तित्व के उपागम

व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए विभिन्न तरह के उपागमों के अन्तर्गत विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, जिनमें प्रमुख है -

प्रकार उपागम -

प्रकार सिद्धान्त व्यक्तित्व का सबसे पुराना सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को विभिन्न प्रकारों में बांटा जाता है और उसके आधार पर उसके शीलगुणों का वर्णन किया जाता है। मार्गन, किंग, विस्ज तथा स्कोपलर के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार से तात्पर्य, "व्यक्तियों के एक ऐसे वर्ग से होता है जिनके गुण एक-दूसरे से मिलते जुलते है। जैसे-अन्तर्मुखी एक प्रकार है और जिन व्यक्तियों को इसमें रखा जाता है उनमें कुछ सामान्य गुण जैसे-संकोचशीलता, सामाजिक कार्यो में अरूचि, लोगो से कम मिलना-जुलना पाया जाता है।"

शारीरिक गुणों के आधार पर -

Dr Vijay Pratap Singh **06-11-2020**
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D (I)H Paper I-Basic Psychological Processes

Topic: व्यक्तित्व

1. **हिप्पोक्रेटस ने शरीर द्रवों के आधार पर -** व्यक्तित्व के चार प्रकार बताएं है। इनके अनुसार शरीर में चार मुख्य द्रव पाये जाते है - पीला पित्त, काला पित्त, रक्त तथा कफ या श्लेष्मा। प्रत्येक व्यक्ति मे इन चारों द्रवो में से कोई एक द्रव अधिक प्रधान होता है और व्यक्ति का स्वभाव या चिन्तप्रकृति इसी की प्रधानता से निर्धारित होता है।
2. **क्रेश्मर का वर्गीकरण -** क्रेश्मर एक मनोवैज्ञानिक थे जिन्होने व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए जोकि निम्नवत् है -
    1. **स्थूलकाय प्रकार -** ऐसे व्यक्ति का कद छोटा होता है तथा शरीर भारी एवं गोलाकार होता है, गर्दन छोटी और मोटी होती है। इनका स्वभाव सामाजिक और खुशमिजाज होता है।
    2. **कृशकाय प्रकार -** इस तरह के व्यक्ति का कद लम्बा होता है परन्तु वे दुबले पतले शरीर के होते है। ऐसे व्यक्तियों के शरीर की माँसपेशियाँ विकसित नही होती है। स्वभाव चिड़चिड़ा होता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से दूर रहने की प्रवृति अधिक होती है
    3. **पुष्टकाय प्रकार -** ऐसे व्यक्ति की माँसपेिशयाँ काफी विकसित एवं गठी होती है। शारीरिक कद न तो अधिक लम्बा होता है न अधिक मोटा। शरीर सुडौल और सन्तुलित होता है। इनके स्वभाव में न अधिक चंचलता होती है और न अक्ताक मन्दन इन्हें काफी सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है।
    4. **विशालकाय प्रकार -** इसमें उपरोक्त तीनों प्रकार के गुण मिले - जुले रूप में पाये जाते है।
3. **शेल्डन का वर्गीकरण -** शेल्डन ने 1990 में शारीरिक गठन के आधार पर सिद्धान्त दिया, जिसे सोर्मेटोटाइप सिद्धान्त कहा गया। शेल्डन ने व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताये है-
    1. **एण्डोमार्फी -** इस प्रकार के व्यक्ति मोटे एवं नाटे दिखता है। इस तहर के शारीरिक गठन वाले व्यक्ति आरामपसंद, खुशमिजाज, सामाजिक तथा खाने - पीने की चीजों में अधिक अभिरूचि दिखाने वोले होते है।

Dr Vijay Pratap Singh **06-11-2020**
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D (I)H Paper I-Basic Psychological Processes

Topic: व्यक्तित्व

2. **मेसोमार्फी -** ऐसे लोगों की हडिड्याँ व माँसपेिशयॉ काफी विकसित होती है। तथा शारीरिक गठन काफी सुडौल होता है।
3. **एक्टोमार्फी -** ऐसे व्यक्तियों का कद लम्बा तथा दुबले पतले होते है। माँसपेशियाँ अविकसित तथा शारीरिक गठन इकहरा होता है। इन्हें अकेले रहना और लोगों से कम मिलना जुलना पसन्द है।

शीलगुण उपागम -

शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति की संरचना भिन्न - भिन्न प्रकार के शीलगुण से ठीक वैसी बनी होती है जैसे एक मकान की संरचना छोटी - छोटी ईंट से बनी होती है। शीलगुण का समान्य अर्थ होता है व्यक्ति के व्यवहारों का वर्णन। जैसे- सतर्क, सक्रिय और मंदित आदि। शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार भिन्न-भिन्न शीलगुणों द्वारा नियन्त्रित होता है जो प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद रहते है। शीलगुण सिद्धान्त में निम्नलिखित मनोवैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान है-

आलपोर्ट का योगदान -

ऑलपोर्ट का नाम शीलगुण सिद्धान्त के साथ मुख्य रूप से जुड़ा है। यही कारण है कि ऑलपोर्ट द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धान्त को 'ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त' कहा जाता है। इन्होने शीलगुणों को दो भागो में बाँटा है -

1. **सामान्य शीलगुण -** सामान्य शीलगुण से तात्पर्य वैसै शीलगुणों से होता है जो किसी समाज संस्कृति के अधिकतर लोगों में पाया जाता है।
2. **व्यक्तिगत शीलगुण -** यह अधिक विवरणात्मक होता है तथा इससे संभ्रान्ति भी कम होता है। ऑलपोर्ट के अनुसार व्यक्तिगत प्रवृत्ति तीन प्रकार की होती है-
    1. **कार्डिनल प्रवृत्ति -** इस तरह की व्यक्तिगत प्रवृत्ति व्यक्तित्व का इतना प्रमुख एवं प्रबल गुण होता है कि उसे छिपाया नहीं जा सकता है और व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार की व्याख्या इस तरह से कार्डिनल प्रवृत्ति के रूप में आसानी से की जा सकती है।

Dr Vijay Pratap Singh **06-11-2020**
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D (I)H Paper I-Basic Psychological Processes

Topic: व्यक्तित्व

2. **केन्द्रीय प्रवृत्ति-** यह सभी व्यक्तियो में पायी जाती है। पत्ररयेक व्यक्ति में 5 से 10 ऐसी प्रवृत्तियां होती हैं जिसके भीतर उसका व्यक्तित्व अधिक सक्रिय रहता है। इन गुणों को केन्द्रीय प्रवृत्ति कहते हैं जैसे सामाजिकता, आत्मविश्वास आदि।
3. **गौण प्रवृत्ति -** गौण प्रवृत्ति वैसे गुणों को कहते है जो व्यक्तित्व के लिए कम महत्वपूर्ण, कम संगत, कम अर्थपूर्ण तथा कम स्पष्ट होते है। जैसे - खाने की आदत, केश शैली आदि। एक व्यक्ति के लिए कोई प्रवृत्ति केन्द्रीय प्रवृत्ति हो सकती है वहीं दूसरे के लिए गौण प्रवृत्ति हो सकती है।

व्यक्तित्व आंकलन

व्यक्तिगत प्रविधि -

जब मूल्यांकनकर्ता की व्यक्तिगत विशेषताएं मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं तो वे व्यक्तिगत विधि कहलाती है। इसके अन्तर्गत प्रमुखत: साक्षात्कार विधि, जीवन इतिहास विधि आत्मकथा, व प्रश्नावली विधि आती है। साक्षात्कार विधि- साक्षात्कार विधि की सहायता से शोधकर्ता पग्रोज्य के स्वयं के अनुभवों के बारे में अच्छी सूझ उत्पन्न कर सकता है और इस प्रकार व्यक्ति के उन सार्थक पक्षों के बारे में जान सकता है जिनके बारे में अन्य किसी संगठित व पूर्व निर्धारित परीक्षण द्वारा नही जाना जा सकता है।

जीवन इतिहास विधि- इस विधि में बालकों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिये एक केश विवरण या इतिहास तैयार किया जाता है। बालक द्वारा पिछले क वर्षो में की गयी अन्त: क्रियाओं का एक विशेष रिकार्ड तैयार किया जाता है। इन अन्त:क्रियाओं का विश्लेषण करके बालक के बारे में समस्त जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें बालक के बारे में समस्त सूचनायें संकलित की जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रविधि-

Dr Vijay Pratap Singh **06-11-2020**
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D (I)H Paper I-Basic Psychological Processes

Topic: व्यक्तित्व

इसमें मूल्यांकनर्ता की व्यक्तिगत विशेषताएं मूल्यांकन की प्रक्रिया को प्रभावित नही करती है। इसके अन्तर्गत आने वाली प्रमुख विधियाँ- निरीक्षण विक्रिा, समाजमिति, व्यक्तित्व प्रश्नावली मापनियाँ, कोटिक्रम मापनी, आदि आते हैं।

समाजमिति- इस विधि द्वारा पत्रयके व्यक्ति के आपसी स्वीकार व तिरस्कार की बारम्बारता द्वारा सामूहिक संरचना का अध्ययन किया जाता है। यह एक समूह के व्यक्तियों में आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करती है। यह समूह में व्यक्ति की स्थिति व उसके स्तर को बताती है। इसके माध्यम से एक बड़े समूह में व्याप्त छोटे-छोटे समूहों की भी जानकारी मिलती है।

प्रक्षेपण प्रविधि -

यह प्रक्षेपण के प्रत्यय पर आधारित है। फ्रायड के अनुसार प्रक्षेपण एक ऐसी अचेतन प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने अपूर्ण विचारों, मनोवश्त्तियों, इच्छाओं, संवेगों तथा भावनाओं को दूसरे व्यक्तियों या वस्तुओं पर आरोपित करता है। इसके अन्तर्गत आने वाले प्रमुख परीक्षण इस प्रकार है-

1. रोर्शाक इंक ब्लाट परीक्षण
2. थीमेटिक अपरशैप्सन परीक्षण
3. वाक्यपूर्ति परीक्षण
4. रोजनबिग पिक्चर फ्रस्टेशन परीक्षण
5. ड्रा ए मैन परीक्षण